बच्चे विविध तरीक़ों से सीखते हैं | संगारेड्डी-अनुभव

ईसीई टीम (संगारेड्डी)

बाला और देविका 3 से 6 साल की उम्र के उन 3.3 करोड़ बच्चों में से हैं जो महिला विकास एवं बाल कल्याण मंत्रालय की समेकित बाल विकास सेवा (ICDS) द्वारा संचालित लगभग 13 लाख आँगनवाड़ी केन्द्रों (AWCs) में जाते हैं। यह आँगनवाड़ी केन्द्र पोषण, स्वास्थ्य और प्रारम्भिक शिक्षा सेवाएँ प्रदान करती हैं। यहाँ पर बच्चे शिक्षकों द्वारा संचालित खेलों और सार्थक गतिविधियों के माध्यम से सीखते हैं। आँगनवाड़ी केन्द्रों में आने वाले अधिकांश बच्चे वंचित परिवारों से आते हैं। क्या इन बच्चों के सीखने की क्षमता उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों पर निर्भर करती है? यदि वे बड़े होकर पढ़ना या लिखना नहीं सीखते हैं और बाद में स्कूल छोड़ देते हैं तो क्या यह उनकी ऐसी व्यक्तिगत कमियों के कारण है जो ख़राब आदतों, आलस्य या शिक्षा में अरुचि जैसे कारकों से प्रभावित हैं? क्या ग़रीबी, जाति, धर्म और अन्य सामाजिक भिन्नताएँ उनके सीखने की क्षमता के लिए ज़िम्मेदार हैं?

पहला केस

पृष्ठभूमि

3 साल की एक स्वस्थ बच्ची देविका, केवल 'अम्मा' और ऐसी ही कुछ एकल शब्द- ध्वनियों को बुदबुदा सकती है और उसे एक ऐसी बदकिस्मत बच्ची माना जाता था जो बोल नहीं सकती। उसके माता-पिता उसकी भाषाई अक्षमता को लेकर चिन्तित थे और उन्होंने कई साधु-महात्माओं की पूजा की तथा कई अनुष्ठान किए। वे थक चुके थे, निराश थे क्योंकि इन प्रयासों से कोई परिणाम नहीं निकल रहा था। जब कोई उम्मीद नहीं बची तो हर तरफ़ से निराश माँ ने 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल तथा शिक्षा-दिवस' (अभिभावक-शिक्षक मीटिंग) में भाग लिया। उस बैठक में शिक्षक ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) के महत्त्व को समझाया एवं बच्चों के उचित विकास के लिए उन्हें प्रारम्भिक वर्षों में जो अवसर मिलने चाहिए उनके सम्बन्ध में बताया। माँ ने तुरन्त देविका को आँगनवाड़ी केन्द्र में भर्ती कराया।

हस्तक्षेप

शुरू-शुरू में तो देविका काफ़ी झिझकती थी लेकिन शिक्षक द्वारा खेलने के अवसर दिए जाने पर वह जल्द ही अन्य बच्चों के साथ घुल-मिल गई और उनके साथ खेलने लगी। आँगनवाड़ी केन्द्रों की भौतिक व्यवस्था ऐसी थी कि देविका वहाँ के बारे में और अधिक जानने को उत्सुक हुई। वह खेल की सामग्रियों में रुचि दिखाती और उनकी ओर इशारा करते हुए अस्पष्ट शब्दों में कुछ बोलती। शिक्षक ने उसकी मदद की और उन चीज़ों के नाम बोलकर बताए जिनकी ओर देविका इशारा करती थी। जब उसी की उम्र के अन्य बच्चे भी उसकी ओर ध्यान देने लगे तो उनकी मदद से उसे सरल शब्दों को सीखने में मदद मिली। धीरे-धीरे वह छोटे वाक्य बनाने लगी। देविका की माँ ने यह बात सुनिश्चित की वह नियमित रूप से केन्द्र में आए। शिक्षक ने भी उसे प्रोत्साहित किया और कक्षा में सभी गतिविधियों में उसे भाग लेने दिया तथा कई अवसर प्रदान किए। इसके परिणामस्वरूप एक अन्तर्मुखी और ग़ैर-सहभागी बच्ची, एक सक्रिय और ख़ुशमिज़ाज बच्ची बन गई।

चिन्तन

आँगनवाड़ी केन्द्र में सीखने का भयमुक्त माहौल के होने के कारण देविका ख़ुशी-ख़ुशी चीज़ों का पता लगाकर सीखने में सक्षम हो सकी। शिक्षक ने बातचीत, कहानी सुनाने, एक्शन गीत गाने और खेल जैसी गतिविधियों के माध्यम से सीखने के अवसर पैदा किए, जिससे देविका की भाषा का विकास समृद्ध हुआ और उसे निरन्तर समर्थन के माध्यम से सीखने में मदद मिली। इसमें उसकी माँ ने भी बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। माँ ने सुनिश्चित किया कि देविका नियमित रूप से केन्द्र में जाए और साथ ही घर पर उसके साथ समय बिताया और जो कुछ उसने केन्द्र में सीखा था, उसे उसके साथ बैठकर दोहराया। अभिभावक-शिक्षक की एक मीटिंग में देविका की माँ ने अन्य बच्चों के माता-पिता के साथ अपने अनुभव साझा किए जिससे इस बात को बल मिला कि बच्चों के विकास में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कितनी महत्त्वपूर्ण है।

दूसरा केस

पृष्ठभूमि

जब बाला 3 साल का था तब वह आँगनवाड़ी केन्द्र में शामिल हुआ। उस समय वह बहुत शान्त रहता था और केन्द्र के एक कोने में चुपचाप बैठा रहता, जबकि अन्य बच्चे गतिविधियों में भाग लेते। वह किसी से बात नहीं करता था। अगर उससे कोई सवाल पूछा जाता तो भी वह जवाब नहीं देता था। बाला के माता-पिता अलग हो चुके थे और वह अपनी माँ के साथ रहता

था। दिहाड़ी मज़दूर होने के कारण वह उसके साथ अधिक समय नहीं बिता पाती थी। जब उसके माता-पिता साथ थे, तब वह लगभग हर रोज़ यही देखता था कि उसका शराबी पिता उसकी माँ को परेशान कर रहा है। एक दिन उसके पिता ने बाला और उसकी बड़ी बहन को बाथरूम में बन्द कर दिया और उनकी माँ को जलाने की कोशिश की। सौभाग्य से उसकी माँ बच गई और उसके पिता को जेल भेज दिया गया। तबसे बाला ने अपनी माँ और बहन के अलावा किसी और से बात करना बन्द कर दिया।



हस्तक्षेप

शिक्षक उससे बातें करते, जान-बूझकर उसे बात का जवाब देने के लिए कहते और उसे खिलौनों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करते। आँगनवाड़ी केन्द्र की सहायिका ने भी उसके साथ बैठना शुरू किया। उसे अन्य बच्चों के साथ गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। वे व्यक्तिगत स्वच्छता की ओर भी उसका ध्यान दिलाती थीं क्योंकि वह केन्द्र में साफ़-सुथरे ढंग से नहीं आता था। उसने सहायिका के साथ खेलना शुरू किया और धीरे-धीरे अन्य बच्चों के साथ भी जुड़ गया। कुछ ही महीनों में वह खेल सम्बन्धी गतिविधियों में बख़ूबी हिस्सा लेने लगा। साथ ही कला सम्बन्धी गतिविधियों में भी सक्रियता से भाग लेने लगा; इतना ही नहीं वह ब्लॉक्स और स्ट्रा जैसी सामग्रियों का भी कुशलतापूर्वक प्रयोग करने लगा।

चिन्तन

शिक्षक और सहायक की ओर से जो ध्यान, समर्थन और प्रोत्साहन बाला को मिला, उसकी वजह से वह अपने घर के प्रतिकूल माहौल के कारण उत्पन्न अपनी परेशानियों से निपट सका। जब एक बार बाला को यह महसूस हुआ कि वह सुरक्षित है और आराम से ख़ुद को व्यक़्त कर सकता है तो वह अन्य बच्चों के साथ खेलने लगा और उसने गतिविधियों में भाग लेना भी शुरू कर दिया। बच्चे के इसी आत्मविश्वास ने आगे चलकर सीखने और विकास के और अधिक अवसर पैदा किए।

निष्कर्ष

आँगनवाड़ी केन्द्रों में आने वाले अधिकांश बच्चे पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले होते हैं, जिनका जीवन सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं और वित्तीय अड़चनों से बाधित होता है। देविका और बाला उन छोटे बच्चों के प्रतिनिधि हैं जो यह साबित करते हैं कि बच्चों के सीखने की क्षमता उनकी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती। उनकी देखभाल और सहायता करने वाले ऐसे शिक्षक, जो उन्हें समान अवसर एवं शिक्षण का एक आनन्ददायी वातावरण प्रदान करें, उनके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। ऐसे योग्य शिक्षक, जो अनुभवों और समग्र विकास के बीच के सम्बन्ध को समझते हैं और प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होते हैं, उच्च-गुणवत्तापूर्ण ईसीई कार्यक्रम को निष्पादित करने में उनकी भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है।

यह शिक्षक एक सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण का निर्माण करते हैं और पाठ्यचर्या सम्बन्धी अन्य बुनियादी ढाँचे को बनाए रखते हैं, जैसे रनिंग ब्लैकबोर्ड, अधिगम-कोना (Learning Corner), बैठने की गोलाकार व्यवस्था, प्रिंट-समृद्ध वातावरण इत्यादि और इस प्रकार सीमित वित्तीय संसाधनों के बावजूद बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें सीखने के अवसर देते हैं। वे बच्चे के सर्वोत्तम विकास को बढ़ावा देने के लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों, माता-पिता और समुदाय के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध और उनके बीच पारस्परिक जुड़ाव का भी निर्माण करते हैं। बच्चों को सिखाने के लिए कोई एक तरीक़ा नहीं है। प्रत्येक बच्चा विशिष्ट है और वह अलग-अलग तरीक़ों से, अलग-अलग समय और विभिन्न स्थानों पर सीखता है। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को ऐसे अवसर दे जिससे वे अपने आसपास की चीज़ों का अनुभव कर सकें, प्रयोग और सवाल कर सकें ताकि उनके सोचने की क्षमता बढ़े और इस बात में उन्हें बच्चों का समर्थन करना चाहिए। फिर हर बच्चा सीख सकेगा।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पहल

संगारेड्डी प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पहल, 3 से 6 साल के बच्चों के समग्र विकास के लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों को जीवन्त शिक्षण केन्द्रों में बदलने और उसके शिक्षकों को चिन्तनशील अभ्यासकर्ता (reflective practitioner) बनाने के लिए उनकी क्षमता विकास पर ध्यान केन्द्रित करती है। यह हस्तक्षेप समेकित बाल विकास सेवा योजना के मौजूदा व्यवस्थात्मक संसाधनों के तहत किया जा रहा है। शिक्षकों की क्षमता का विकास, गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रम की और बच्चों के लिए उपलब्ध शुरुआती अधिगम के अवसरों की धुरी है। हमारा अनुभव बताता है कि इस तरह का समग्र 'सेवाकालीन क्षमता विकास मॉडल' बच्चों के विकास के

लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम को निष्पादित करने के लिए शिक्षकों की क्षमता को प्रभावी ढंग से विकसित कर सकता है।

तेलंगाना के संगारेड्डी जिले के सभी शिक्षकों का सेवाकालीन क्षमता विकास एक बहु-आयामी मॉडल के माध्यम से किया जा रहा है। शिक्षकों के साथ हम कई मंचों के माध्यम से जुड़े हैं जैसे कार्यशालाएँ, केन्द्र-स्तरीय संलग्नता, सेक्टर-स्तरीय बैठकें, परियोजना सम्बन्धी बैठकें, ईसीसीई दिवस, बाल-मेला, सेमिनार, शिक्षक-मेला और पत्रिका आदि। इन जुड़ावों से प्राप्त अन्तर्दृष्टि से शिक्षकों को अपने साथियों के साथ अच्छे अभ्यासों को साझा करने और उनसे सीखने में मदद मिलती है। अनुभवात्मक दृष्टिकोण शिक्षकों को उन गतिविधियों का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है जिन्हें वे बच्चों के साथ कर सकते हैं ताकि वे बच्चों में महत्त्वपूर्ण जीवन-कौशलों का विकास करने में सक्षम हो सकें।



शिक्षक के प्रभाव-क्षेत्र में बच्चों के अधिगम को सक्षम करने वाले कारक एक अच्छे ईसीई कार्यक्रम के कुछ महत्त्वपूर्ण, बुनियादी तत्व यहाँ दिए गए हैं जो आँगनवाड़ी केन्द्रों में आने वाले बच्चों में अधिगम और विकास को सक्षम कर सकते हैं और जो शिक्षक के नियन्त्रण में हैं। एक दिशा-निर्देश के रूप में इसका उपयोग करने से शिक्षक इस कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से निष्पादित करने में सक्षम होंगे :

- शिक्षक प्रतिदिन स्वास्थ्यकर और पौष्टिक भोजन प्रदान करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि बच्चे भोजन से पहले और भोजन के बाद अच्छी तरह से हाथ धोएँ और उसके बाद दोपहर को कम-से-कम एक घण्टे के लिए सोएँ।
- शिक्षक, हर महीने बच्चों के विकास (लम्बाई और वजन) को मापते हैं।
- शिक्षक केन्द्र पर एक प्राथमिक चिकित्सा किट रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि केन्द्र में और उसके आस-पास स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण हो।
- शिक्षक थीम पर आधारित समय-सारिणी के अनुसार अधिगम के लिए एक प्रेरक वातावरण बनाते हैं और बच्चों को खेल की सामग्री सुलभ कराते हैं।
- शिक्षक, बच्चों के कार्य को रिकॉर्ड करते हैं और उन्हें प्रदर्शित करते हैं।
- शिक्षक बच्चों की देखभाल करते हैं और अनुशासन के सकारात्मक तरीक़ों का उपयोग करते हैं।
- शिक्षक, खेल और भोजन के दौरान बच्चों के बीच मेल-जोल को प्रोत्साहित करते हैं।
- शिक्षक रोज़ाना कम-से-कम तीन से चार घण्टे ईसीई कार्यक्रम का संचालन करते हैं।

एक अच्छे ईसीई कार्यक्रम के लिए कुछ शिक्षण-अभ्यास

एक छोटे से गाँव में शैलजा नामक एक शिक्षिका, अधिगम-कोने में तब तक बच्चों को मुक्त रूप से खेलने देती हैं, जब तक कि अधिकांश बच्चे आँगनवाड़ी केन्द्र में नहीं आ जाते। उन्होंने कक्षा में ऐसे विभिन्न कोने बनाए हैं जिनके माध्यम से बच्चों को स्वयं खोजबीन और अनुभव करने के अवसर मिलते हैं। बच्चे आपस में बातचीत करते हैं, सहयोग करते हैं, साझा करते हैं, समूहों में काम करते हैं, अपनी बारी का इन्तज़ार करते हैं और इस प्रकार उनकी सामाजिक दक्षताओं में सुधार होता है। बच्चों को मुक्त रूप से खेलने देने के साथ-साथ शिक्षिका, अपने मार्गदर्शन में इंडोर एवं आउटडोर खेलों को खेलने के अवसर भी प्रदान करती हैं।



क्रियाकलाप	समयावधि
कक्षा के भीतर एवं बाहर, मुक्त और मार्गदर्शित खेल के अवसर प्रदान करें।	60 मिनट
‘सर्कल टाइम’ में बच्चों के साथ/ उनके बीच सार्थक अन्तःक्रिया का सुगमीकरण करें।	पूरे दिन में 60 मिनट
बच्चों के व्यवहार का अवलोकन करने और उनके सामाजिक कौशलों का मार्गदर्शन करने के लिए दिनचर्या की घटनाओं का उपयोग करें।	हर समय
बच्चों को रचनात्मक अनुभव प्रदान करें।	20 मिनट
बच्चों को पढ़ने के (साक्षरता के) त्वरित मौके देना।	30 मिनट
बुनियादी संख्या-ज्ञान सम्बन्धी कौशलों को बढ़ावा देने के लिए वस्तुओं की खोजबीन और प्रयोग में बच्चों को संलग्न करें।	30 मिनट

जब सभी बच्चे केन्द्र में पहुँच जाते हैं तो वे उन्हें एक गोल घेरे में बैठा देती हैं और दीवार पर चिपके नाम-चार्ट पर बच्चों के हस्ताक्षर लेकर उनकी उपस्थिति दर्ज करती हैं। इस तरह विभिन्न गतिविधियों को एकीकृत करते हुए, उनके माध्यम से वे बच्चों को साक्षरता-अनुभव प्रदान करती हैं। ‘सर्कल टाइम’ में वे बातचीत से शुरू करते हुए कहानी, गीत और बुनियादी संख्या-ज्ञान सम्बन्धी गतिविधियाँ करवाती हैं। सर्कल टाइम की गतिविधियों में, बच्चों को सुनने, बोलने और ध्यान देने के अवसरों को समृद्ध करने के लिए वे ठोस वस्तुओं और प्रिंट-सामग्री का उपयोग करती हैं।

बच्चों को कहानी की किताबें भी मिलती हैं जिनमें वे चित्र-पठन और पढ़ने का नाटक करते हैं। मौसम-चार्ट, नियम-चार्ट, प्रदर्शन बोर्ड जैसे अन्य क्रियाकलाप बच्चों को कार्यात्मक प्रिंट की ओर ले जाने के समृद्ध अवसर देते हैं। शैलजा बच्चों को विभिन्न भावनाओं को पहचानने, समझने और उन्हें अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ने के अवसर प्रदान करती हैं। बच्चों से जो प्रश्न वे नियमित रूप से पूछती हैं, उनमें एक है, ‘आज आप कैसा महसूस कर रहे हैं?’ इसका उत्तर देने के लिए प्रत्येक बच्चा एक भावना-कार्ड चुनता है और अपनी वर्तमान भावना का कारण बताता है। व्यावहारिक अनुभव, विचारशील प्रश्न, हँसी-खेल, अनुवर्ती गतिविधियाँ, व्यवहार का उचित प्रदर्शन, मुक्त खेल के सत्र, उच्च एवं निम्न गहनतापूर्ण गतिविधियों के बीच सन्तुलन तथा मुक्त और मार्गदर्शित गतिविधियाँ आदि कुछ ऐसे तरीक़े हैं जिनका उपयोग वे एक दिन की सभी गतिविधियों में करती हैं।

अनुभवों के आधार पर नीचे कुछ सरल किन्तु प्रमुख क्रियाकलापों का उल्लेख किया गया है जिन्हें शिक्षक को हर दिन आँगनवाड़ी में करना चाहिए। बच्चों के विकास पर इनका महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।



एक अच्छे ईसीई कार्यक्रम के लिए महत्त्वपूर्ण कारक

एक प्रभावी व अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया ईसीई-कार्यक्रम वह होता है जो प्रशिक्षित और सक्षम शिक्षकों द्वारा प्रदान किया जाए। ऐसे शिक्षक जो अनुभवों और समग्र विकास के बीच के सम्बन्ध को समझते हों और बच्चों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हों। यह महत्त्वपूर्ण कारक हैं :

आधारभूत सुविधाएँ

छोटे बच्चों के अधिगम और विकास के लिए एक ऐसे भौतिक वातावरण की आवश्यकता होती है जो खुला-खुला हो, अनुकूल और सुरक्षित हो। प्रारम्भिक शिक्षा के वातावरण में इन बातों का शामिल होना आवश्यक है- पर्याप्त स्थान, स्वच्छ शौचालय, रनिंग ब्लैकबोर्ड, अधिगम-कोने, बैठने के लिए गोल घेरा आदि। इसके अलावा बच्चों को इनडोर और आउटडोर दोनों स्थानों पर सीखने और खेलने के लिए बहुत सारी दृश्य, स्पर्श और पाठ्य-सामग्री की आवश्यकता होती है।

सुनीता ने 8 साल पहले एक छोटे से किराए के कमरे में शिक्षक के रूप में काम करना शुरू किया, जहाँ पूर्व-प्राथमिक शैक्षिक गतिविधियों के संचालन की गुंजाइश नहीं थी। उन्होंने जगह बदलने की कोशिश की लेकिन लोग आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए किराए पर जगह देने को तैयार नहीं थे। जब उन्हें पता चला कि प्राथमिक स्कूल के रसोईघर का उपयोग नहीं किया जा रहा है तो उन्होंने गाँव वालों के सहयोग से स्कूल के मुख्य अध्यापक से मुलाकात की और स्कूल परिसर में आँगनवाड़ी केन्द्र शुरू करने की मंज़ूरी माँगी। कुछ महीने बीत गए लेकिन कोई जवाब नहीं आया। इस दौरान मुख्य अध्यापक इस बात का अवलोकन कर रहे थे कि सुनीता अपने केन्द्र में बच्चों को अधिगम के बेहतर अवसर प्रदान करने के लिए किस तरह के प्रयास कर रही हैं। उनका ध्यान इस



बात पर भी गया कि उनके अपने स्कूल में पहली कक्षा में जो बच्चे थे, उनमें जो बच्चे आँगनवाड़ी केन्द्र से आए थे और जो वहाँ से नहीं आए थे - उनकी क्षमताओं में स्पष्ट अन्तर था। इसलिए उन्होंने आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए स्कूल में एक ऐसा कमरा देने की पेशकश की जो काम में नहीं लिया जा रहा था और रसोईघर से बेहतर भी था। एक महीने के भीतर सुनीता ने उस कमरे को छोटे बच्चों के अधिगम के लिए एक ऐसे जीवन्त स्थान में बदल दिया जिसका वातावरण प्रिंट-समृद्ध था। बच्चों की दैनिक गतिविधियों के लिए बेहतर जगह पर जाने की उनकी दृढ़ इच्छा उनके निरन्तर प्रयासों के कारण पूरी हुई।

पाठ्यक्रम

बच्चों के समग्र विकास के लिए एक चरणबद्ध उपयुक्त पाठ्यक्रम आवश्यक होता है। इसमें अन्तःक्रियात्मक शिक्षण के माध्यम से व्यावहारिक व क्रियाशील अनुभव, खेल-आधारित अभ्यास, बाहरी गतिविधियों और सामग्री के साथ जुड़ाव को शामिल करना चाहिए।

उनका काम रुका नहीं, बल्कि उन्होंने बच्चों को अधिगम के व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के लिए सरल, बिना-लागत वाले और स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके ख़ुद ही ऐसे टीएलएम बना लिए।

शिक्षक

आँगनवाड़ी के अधिकांश शिक्षक कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं और अच्छा काम करने का प्रयास करते हैं। शिक्षकगण, अधिगम के अनुभव के अभिन्न अंग हैं और उन्हें हमारे विश्वास और समर्थन की आवश्यकता होती है। आँगनवाड़ी शिक्षक के कार्य को स्कूल-शिक्षक के कार्य की तरह ही जटिल माना जाना चाहिए। नए शिक्षकों के लिए पेशेवर योग्यता आवश्यक है और मौजूदा शिक्षक बेहतर शिक्षक बन सकें इसके लिए आवश्यक है कि सेवाकालीन कार्यक्रमों को सतत रूप से संचालित किया जाए।

प्रशान्ति नामक शिक्षिका एक ऐसे गाँव में आँगनवाड़ी केन्द्र चलाती हैं, जहाँ घरों की छतें केवल घास-फूस से बनी हुई हैं। आँगनवाड़ी के लिए जो सबसे अच्छा स्थान वे किराए पर ले सकती थीं, वह मिट्टी के फर्श वाला,



बालमणि नामक शिक्षिका शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग करके बच्चों के विकास के लिए कई अवसर प्रदान कर रही हैं। वे बच्चों के बुनियादी संख्या-ज्ञान सम्बन्धी क्षमताओं, जैसे कि मिलान करना, वर्गीकरण, पैटर्न बनाना आदि को बढ़ाने के लिए रंगीन कपड़े के टुकड़ों, अण्डे की ट्रे, कागज़ के गिलासों आदि का उपयोग करती हैं। विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के साथ, विविध गतिविधियों को करने के कारण बच्चों के ध्यान देने की अवधि बढ़ी है, जिससे शिक्षिका कम समय में ही विभिन्न अवधारणाओं को विकसित कर पाईं। इस प्रकार टीएलएम की अनुपलब्धता के कारण

स्टील के पैनल से बना एक छोटा-सा कमरा था। वे कुछ नया सीखना चाहती थीं और आँगनवाड़ी केन्द्र को विकसित करने में रुचि रखती थीं, अतः उन्होंने अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भाग लिया। उन्होंने पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न घटकों को समझा और सीखी हुई बातों को लागू करना शुरू कर दिया। उन्होंने मौजूदा कमरे की फर्श पर चटाई बिछाई, दीवारों को रंगीन प्रिंट-समृद्ध तस्वीरों से ढक दिया, अधिगम के कोनों को व्यवस्थित किया और बच्चों के साथ गतिविधियों का संचालन शुरू किया। कुछ ही महीनों में माता-पिता और समुदाय के

सदस्यों को यह परिवर्तन साफ़ नज़र आने लगा जिसके परिणामस्वरूप नामांकन में वृद्धि हुई। जब उन्होंने एक जिला-स्तरीय संगोष्ठी में अपनी कहानी प्रस्तुत की तो ऐसे कई शिक्षक, जो इसी तरह की अड़चनों के बीच काम करते हैं, उनके इस अनुभव से प्रेरित हुए।

परिवार

परिवार को बच्चे के अधिगम और विकास के वातावरण के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से के तौर पर पहचानने की आवश्यकता है। अतः आँगनवाड़ी केन्द्र, माता-पिता और समुदाय के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्धों और पारस्परिक जुड़ाव को विकसित करना महत्त्वपूर्ण है।

अनीता नामक शिक्षिका ने देखा कि समुदाय में कई ऐसे बच्चे थे जो आँगनवाड़ी केन्द्र में नहीं आते थे। उन्होंने माता-पिता और समुदाय के सदस्यों को मासिक रूप से आयोजित 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल तथा शिक्षा दिवस' (अभिभावक-शिक्षक मीटिंग) में आमन्त्रित करना शुरू कर दिया और उन्हें आँगनवाड़ी केन्द्र में होने वाली सभी दैनिक गतिविधियों और बच्चे के विकास पर इनके प्रभाव के बारे में बताया। बच्चों के लिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के महत्त्व को समझाने के लिए वे उन लोगों के घर भी गईं जो इन बैठकों में शामिल नहीं हुए थे। समुदाय ने आँगनवाड़ी केन्द्र को 'भोजन मिलने के स्थान' के बदले एक ऐसे 'जीवन्त अधिगम केन्द्र' के रूप में देखना शुरू किया जहाँ बच्चे अपनी क्षमताओं का विकास करते हैं। समुदाय के नज़रिए में यह बदलाव लाने में उन्हें छह महीने लगे। इससे अनीता को केन्द्र का नामांकन 25 से 40 तक बढ़ाने में मदद मिली।

References

Early Childhood Education Initiative Sangareddy. (2017). *Anganwadi Teachers Development Tracking.* Sangareddy. Azim Premji Foundation. Unpublished.

Early Childhood Education Initiative Sangareddy. (2018). *Anganwadi Teachers Capacity Development Model for Impactful Early Learning.* Sangareddy. Azim Premji Foundation. Unpublished.

Ministry of Women and Child Development. (2016). *Anganwadi Centres,* 2013. Delhi. Government of India.

**Names have been changed to protect the identities of the children.*

ईसीई टीम (संगारेड्डी)। अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) पहल, 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के समग्र विकास के लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों को जीवन्त शिक्षण-केन्द्रों में बदलने के उद्देश्य से चिन्तनशील अभ्यासकर्ता बनने के लिए शिक्षकों के क्षमता-विकास पर ध्यान केन्द्रित करती है। **अनुवाद :** नलिनी रावल